26 जनवरी 2023 का उद्बोधन

प्रो. साकेत कुशवाहा
कुलपति

सुप्रभात !

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एन. टी. रिकम जी, वित्त अधिकारी प्रो. ओटेम पदुंग जी, परीक्षा नियंत्रक डॉ. बिजय राजी जी, विभिन्न संकायों के संकायाध्यक्ष गण, विभागाध्यक्ष गण, प्रांगण में उपस्थित समस्त प्राध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी, विद्यार्थी, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय परिसर माध्यमिक विद्यालय से आए छोटे-छोटे बच्चे, उनके अध्यापक, बाल-वाटिका के हमारे नन्हे-मुन्हे छात्र एवं उनके अध्यापिका गण तथा अन्य सभी उपस्थित जनों को मैं साकेत कुशवाहा, देश के राष्ट्रीय पर्व 74वें गणतंत्र दिवस के पुनीत अवसर पर अपनी तरफ से एवं विश्वविद्यालय की ओर से आपसबको हार्दिक बधाई तथा शुभकामनाएँ देता हूँ। आज बसंत पंचमी भी है, इस दिन विद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती की पूजा की जाती है। आप सभी को बसंत पंचमी की भी हार्दिक शुभकामनाएँ।

मैं सर्वप्रथम देश के सभी वीर बलिदानियों एवं स्वतंत्रता सेनानियों को नमन करता हूँ जिनके बलिदान व संघर्ष के परिणामस्वरूप ही हमारा देश 15 अगस्त 1947 को आज़ाद हुआ और 26 जनवरी 1950 को अपना संविधान लागू हुआ । हमें इस बात का गर्व है कि हमारा संविधान विश्व का सबसे बड़ा एवं विस्तृत लिखित संविधान है, जिसे बनने में 2 वर्ष, 11 महीने और 18 दिन का समय लगा। आज के इस पावन अवसर पर मैं डॉ. भीमराव आंबेडकर को विशेष श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहूँगा जिनकी अध्यक्षता में संविधान निर्माण का कार्य संपन्न हुआ और भारत एक लोकतांत्रिक, संप्रभु और गणतंत्र देश के रूप में दुनिया के समक्ष उदित हुआ। गणतंत्र दिवस को मनाने के लिए 26 जनवरी का दिन इसलिए चुना गया क्योंकि 26 जनवरी 1930 को लाहौर के कांग्रेस अधिवेशन में भारत को 'पूर्ण स्वराज' की घोषणा की गयी थी। मैं संविधान निर्माण सभा के सभी सम्मानित सदस्यों के प्रति भी अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ जिनके विवेक और अदम्य उत्साह के कारण यह संविधान हमें प्राप्त हुआ।

यह 74वां गणतंत्र इसलिए भी विशेष है क्योंकि भारत अपना 'अमृत काल' मना रहा है। अपने 75 वर्ष की उपलब्धियों का पुनरावलोकन करते हुए शताब्दी वर्ष में भारत दुनिया के अग्रणी राष्ट्रों में खड़ा होने के लिए पुरुषार्थी बनकर चुनौतियों से लड़ने के लिए तैयार हो रहा है। यह वर्ष इसलिए भी

महत्वपूर्ण है कि भारत दुनिया की बीस प्रमुख देशों की संस्था G-20 की अध्यक्षता भी कर रहा है। इस एक वर्ष के कालखंड में भारत अपनी सांस्कृतिक वैविध्य के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक सामर्थ्य को भी दुनिया के सामने रखेगा। इससे भारत की प्रतिष्ठा और बढ़ेगी। यह इसलिए संभव हो सका है कि भारत एक गणतांत्रिक देश है जहाँ प्रत्येक नागरिक को अपना जन प्रतिनिधि चुनने का विशेषाधिकार प्राप्त है। हमारा संविधान भारत के प्रत्येक नागरिक के समानता के अधिकार को सुनिश्चित करता है। साथ ही यह दिन हमें देश के प्रति हमारी प्रतिबद्धता व ज़िम्मेदारियों को भी याद दिलाने वाला दिन है। संविधान जहाँ हमारे मौलिक अधिकारों को सुरक्षित करता है वहीं हमें अपने कर्तव्यों का ज्ञान भी कराता है। हमें एक आदर्श नागरिक के रूप में सतत कर्तव्यों का निर्वहन करते रहना चाहिए। इससे अधिकार की प्राप्ति स्वतः होती जाती है। 'देश हमें देता है सबकुछ, देश को हम भी देना सीखें'। देश है तो हम हैं, तभी हमारे अधिकार भी हैं, मांगें हैं, अभिव्यक्ति की आज़ादी है और स्वाभिमान भी है। उन परतंत्र देशों को देखा जा सकता है जहाँ सब प्रकार के अधिकार और आज़ादी प्रतिबंधित है।

हमारा देश विविधता में एकता के भाव को संवर्धित करता है। इसका एक प्रमुख उदाहरण हमारा यह विश्वविद्यालय है। इस परिसर में विविन्न प्रान्तों के अनेक भाषा-भाषी प्राध्यापक, प्रशासनिक अधिकारी तथा कर्मचारी रहते हैं परन्तु सबका भावबोध भारत बोध ही है। सभी अपने अथक परिश्रम से इस विश्वविद्यालय को उत्कृष्ट विश्वविद्यालय बनाने के लिए सतत अपना खून पसीना बहा रहे हैं। जब विश्वविद्यालय विकसित होगा तब वह देश के विकास का एक कड़ी बनेगा। आज इस अवसर पर आप सभी पुरुषार्थी कर्मवीरों का सादर अभिनन्दन करता हूँ। इस अवसर पर हम पुनः यह प्रण लें कि हम तमाम विपरीत परिस्थितियों में भी देश की संप्रभुता की रक्षा करते रहेंगे। संविधान के सभी प्रावधानों, मुख्य रूप से इसमें कही गयी समानता की बात, इसके न्यायप्रिय, धर्मनिरपेक्ष एवं लोकतांत्रिक चरित्र की रक्षा करना हमारा कर्तव्य ही नहीं हमारा राष्ट्रधर्म भी है।

आज़ादी के इस अमृत काल में देश उन अनाम एवं अज्ञात वीर बलिदानियों को याद कर रहा है जिनके शौर्य-बलिदान के कारण भारत गुलामी के बेड़ियाँ से मुक्त हुआ। राजीव गाँधी विश्वविद्यालय भी सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर अरुणाचल प्रदेश के अनाम वीर बलिदानियों को इतिहास के पन्नो में जोड़ने के लिए सार्थक प्रयास किया है। आज़ादी की लड़ाई की शुरुआत से ही

देश के इस सुदूर उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में भी आज़ादी के लिए कई लड़ाइयाँ लड़ी गईं किन्तु किन्हीं कारणों से स्वतंत्रता संग्राम के उन नायकों का नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज नहीं हो सका। यहाँ का जनसाधारण तो अपने-अपने इलाकों में उन्हें याद करता है, पूजता है परन्तु देश के लिए वे गुमनाम रहे। विगत डेढ़ वर्ष से राजीव गाँधी विश्वविद्यालय की रिसर्च टीम के अथक प्रयासों के कारण इस प्रदेश के अनेक गुमनाम स्वतंत्रता सैनानियों अर्थात 'Unsung Heroes' का नाम उजागर हुआ है। और उनसे सम्बंधित रिपोर्ट सरकार को प्रस्तुत की जा चुकी है। अभी 23 जनवरी को नेताजी सुभाष चन्द्र बोश की जयंती पर विश्वविद्यालय ने एक बड़े कार्यक्रम का आयोजन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की है।

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय परिवार में चुनौतियों से लड़ने की अदम्य जिजीविषा रही है जिसके कारण कोविड-19 जैसी महामारी से हम उबर सकें। हमने सभी मोर्चों पर इसका डटकर सामना किया और बहुत हद तक हमें सफलता भी मिली। इसकी बात करते हुए मैं आपसभी को आगाह करता हूँ कि कविड -19 जैसी महामारी अभी जड़मूल से ख़त्म नहीं हुई है। ख़तरा आज भी टला नहीं है। आज भी चीन जैसा बड़ा और संपन्न देश इस महामारी से जूझ रहा है। हमारे आदरणीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी एवं अटूट संकल्प शक्ति के कारण कोविड-19 जैसे दानव पर विजय प्राप्त हुई। आज ही के दिन कोविड-19 के रोकथाम के लिए हमारे यशश्वी प्रधानमन्त्री ने Nasal Vaccine देश को समर्पित किया है। आप सभी बूस्टर डोज़ के रूप में इसे लगवा सकते है। हर विश्वविद्यालय अपने सर्वांगीण विकास के लिए कुछ चुनौतियों का सामना करता है। राजीव गाँधी विश्वविद्यालय की भी निःसंदेह कई चुनौतियां हैं जिसे हमने एक टाइम फ्रेम में हल करने का प्रयास किया है। किसी भी बड़े कार्य को पूर्ण होने में समय लगता है। मेरा ऐसा विश्वास है कि दृढ़ इच्छा और अटूट संकल्प शक्ति हो तो किसी भी चुनौतियों पर जीत हासिल की जा सकती है। हमने विश्वविद्यालय की अनेक चुनौतियों का सामना किया है और उसका सार्थक परिणाम आप देख सकते है। विश्वविद्यालय में आप सभी के सहयोग से अनेक फ्रंट पर कार्य चल रहा है। कुछ दिनों में यह विश्वविद्यालय पूर्ण विकसित रूप में आपके समक्ष होगा। इसके गौरव की आप अनुभूति करेंगे। कुछ ही दिनों में इलेक्ट्रॉनिक्स संकाय के लिए भवन, मुख्य पुस्तकालय का विस्तार, दो-दो सौ की क्षमता वाले दो छात्रावास छात्रों एवं छात्राओं के लिए, टाइप III की 12 एवं टाइप IV की 20 आवासीय भवनों के निर्माण तथा यूटिलिटी सोर्सेज सेंटर आदि का निर्माण पूर्ण हो जायेगा। इसके अतिरिक्त EWS यानि अति पिछड़े वर्ग के अंतर्गत प्राप्त धनराशि से छात्र एवं छात्राओं के लिए 125 सीटों की क्षमता वाले

दो छात्रावासों का निर्माण तथा मल्टी पर्पज़ अकादमिक प्रोजेक्ट का निर्माण कार्य भी अपने अंतिम चरण में है। विश्वविद्यालय क्रीड़ा मैदान के पास रोस्ट्रम (मंच) बनकर तैयार है तथा छात्र गतिविधि केन्द्र का निर्माण कार्य शीघ्र पूर्ण होने वाला। इसके साथ ही पेयजल की महत्वकांक्षी परियोजना अति शीघ्र आपको आनंद प्रदान करने वाली है। अगले एक सप्ताह के भीतर नदी श्रोत से पानी पंप (pump) का ट्रायल शुरू हो रहा है। अगले आने वाले होली का रंग विश्वविद्यालय के पानी के संग होगा। परिसर की दुरुहता और कुछ तकनिकी कारणों से इस परियोजना में विलम्ब हुआ है। विश्वविद्यालय का एक बड़ा revenue इसकी उर्जा जरूरतों पर खर्च होता है। आप सभी विश्वविद्यालय के प्रबुद्ध नागरिक हैं आपसे उर्जा की बचत करने की अपेक्षा करता हूँ। आप सभी अपने कक्ष से या विभाग से निकलते समय यह सुनिश्चित करें कि कहीं कोई बिजली का यंत्र (ए सी, बल्ब, पंखा आदि) चालु तो नहीं है? यदि चालू है तो उसे बंद करना अपना पुनीत कर्तव्य समझना चाहिए। उर्जा के साथ-साथ जल की बचत करने की अपनी प्रवृत्ति विकसित होनी चाहिए। यह जो जल पंप कर विश्वविद्यालय लाया जायेगा उसमें जो बिजली की खपत होगी उसकी पूर्ति विश्वविद्यालय के revenue से ही किया जाएगा। आपके द्वारा बचाई गयी बिजली और पानी का उपयोग दूसरे जरूरतमंद लोग कर सकेंगे। इससे पर्यावरण का भी नुकसान कम होगा। आप सबसे विशेष आग्रह है कि कार्बन उत्सर्जन को कम करने में सहयोग करें।

इस अवसर पर आप सभी के समक्ष यह कहते हुए संतोष भाव झलकता है कि राजीव गाँधी विश्वविद्यालय अपने अकादमिक स्तर के नित नए मानदण्ड को छुवा है। हमने विपरीत परिस्तिथियों में भी अकादमिक कैलेंडर का पूरी निष्ठा से पालन किया है इसमें सभी विभागों के अध्यापकों एवं कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। सभी विभागों ने विश्वविद्यालय के अकादमिक स्तर को उन्नत बनाने हेतु अनेक कार्यक्रमों का वर्षभर आयोजन किया है। सभी विभागों के संकाय सदस्यों ने अपने दायित्वबोध के कारण सफलतापूर्वक समय पर पाठ्यक्रम पूरी की हैं। इस मामले में विश्वविद्यालय का परीक्षा विभाग भी कंधे से कन्धा मिलाकर चलने का प्रयास किया है। इसका परिणाम यह हुआ कि संत्रांत परीक्षाएँ एवं उनके परिणामों की घोषणा भी समय पर हुई है। हमने विश्वविद्यालय कलेंडर का अनुपालन करते हुए अपनी तय तिथि पर विश्वविद्यालय के 19वें दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन किया।

इस अवसर पर मैं यह बताना चाहता हूँ कि आने वाले फरवरी माह से विश्वविद्यालय की लंबित पड़ी 42 (CAS) पदोन्नतियों और 91 पदों के लिए नयी नियुक्तियों की प्रक्रिया शुरू होने वाली है। 91

नयी नियुक्तियों के पूर्ण होने के पश्चात इसके डेढ़ गुना गैर शैक्षणिक (Non- Teaching) पद सृजित होंगे जिन्हें भविष्य में भरा जाएगा। यह प्रक्रिया विश्वविद्यालय के मान्य नियमों पर आधारित होगी इसलिए किसी भी प्रकार के अफवाहों से हम सभी को बचना चाहिए। अफवाहों को हवा देने से या अपना आत्मसंयम खोने से न अपना हित होगा न विश्वविद्यालय का। इसलिए मैं सभी से आग्रह करता हूँ कि आइये हम सभी मिलकर विश्वविद्यालय की प्रगति को आगे बढ़ाएँ, हम सभी शान्ति और सद्भाव से नियुक्ति की इस प्रक्रिया को पूरा करें। इसके लिए हम सबको अनावश्यक विमर्शों से बचना चाहिए।

मैं आप सभी से एक आग्रह करता हूँ कि आप अपने भीतर की इच्छाशक्ति को पहचानिए और उसे अपने कार्य में परिणत करने का प्रयास कीजिये इससे आपके ज्ञान और योग्यता में निखार तो आयेगा ही विश्वविद्यालय की प्रगति के लिए भी वह मिल का पत्थर साबित होगा। देश आपके पुरुषार्थ को आवाज़ दे रहा है। उठो, जागो और कार्य में लग जाओ। मुझे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी की वे पंक्तियाँ याद आ रही हैं –

अवसर तेरे लिए खड़ा है

फिर भी तू चुपचाप पड़ा है

तेरा कर्मक्षेत्र बड़ा है

अरे भारत ! उठ, आँखें खोल

अंत में मैं यह कहना चाहूँगा कि 'हम रहें न रहें, देश को रहना चाहिए'।

भारत माता की जय

जयहिंद ! जय अरुणाचल !

कुलपति

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, दोइमुख